PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH | Volume - 9 | Issue - 8 | August - 2020 | PRINT ISSN No. 2250 - 1991 | DOI : 10.36106/paripex

ORIGINAL RESEARCH PAPER

Education

वैश्वीकरण के बदलते परिवेश में कृषि विविधीकरण का भारतीय कृषि पर प्रभाव : बिहार के संदर्भ में एक विशेष अध्ययन

KEY WORDS:

डॉ. अनामिका कुमारी

ABSTRACT

भारत एक कृषि प्रधान देश है किन्तु यहाँ की कृषि लाभ के लिए किया जाने वाला व्यवसाय नहीं, बल्कि कृषि जीवन–यापन का एक साधन है। किसानों को न तो समय पर उन्नत बीज मिल रहे हैं, नहीं उर्वरक उपलब्ध हो पा रहा है और न ही पर्याप्त बिजली मिल रही है, अर्थात् किसानों की सबसे बड़ी समस्या उसकी साधनहीनता हैं। ऐसी विपरीत और कठिन परिस्थितियों में किसान कृषि कार्य करता है। गांव के गरीब किसान सम्पत्ति बढ़ाने रोजगार पाने अपनी आय बढ़ाने या जीवन की गुणवत्ता सुधारने में विफल रहे हैं। आज गांवों में खुशहाली हरियाली और समृद्धि लाने के लिए गांवों को आधुनिक विश्व बाजार से जोड़कर ही सफलता पायी जा सकती है। भूमंडलीकरण, उदारीकरण के इन उन्नत आधुनिक दौर में भी भारत का मुख्य व्यवसाय कृषि ही है। वर्तमान वैश्वीकरण के युग में कृषि का विविधीकरण एक अनिवार्य वास्तविकता है। प्रतियोगिता में बने रहने हेतु यह आवश्यक है कि कृषि वस्तुओं में गुणवत्ता हो और यह तभी संभव है जब कृषि क्षेत्र को एक उद्योग के रूप में विकसित कर लाभ का धंधा बनाया जाए। कृषि के विविधीकरण से एक तरफ किसानों के कृषि उत्पादन में वृद्धि होती है। साथ ही, कृषि सहायक उद्यमों का भी विकास होता है।

परिचयः

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। तथापि भारतीय कृषि की यह विडम्बना रही है कि भारत में अधिकांशतः जीविका एवं गुजारे की फसल का उत्पादन होता रहा है। अगर हम जीविकोपार्जन कृषि के साथ अधिक लाभ देने वाली फसलों के उत्पादन में वृद्धि करें तो न केवल किसानों की आय में वृद्धि की जा सकती है बल्कि देश की अर्थव्यवस्था में भी तेजी आ सकती है। हालांकि कृषि को लाभदायक बनाने हेतु निरंतर प्रयास हुए हैं लेकिन हम कृषि का कोई ऐसा मॉडल विकसित नहीं कर पाए हैं जिससे किसानों को कृषि में रोजगार अथवा लाभ का लक्ष्य दिखाई दे। हालांकि सरकार द्वारा किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए कई योजनाएँ चलाई जा रही है लेकिन अभी भी बड़ी संख्या में किसानों तक ये फायदे नहीं पहुंच पा रहे। जिसमें प्रमुख कारण किसानों का अशिक्षित होना, प्रशिक्षण का अभाव या फिर सूचना का अभाव है। एक शिक्षित, प्रशिक्षित और सूचित किसान ही आज प्रगतिशील खेती कर रहा है।

कृषि के विविधीकरण का सूत्र अपनाते हुए किसानों को अनाज के साथ ही बागवानी के प्रति भी जागरूक किया जा रहा है। इससे कृषि जोत में तेजी से आ रही गिरावट को रोका जा रहा है। साथ ही खेती को फायदे का सौदा भी बनाया जा रहा है, चूंकि खेती का रकबा तेजी से कम हो रहा है। राष्ट्रीय कृषि ग्रामीण विकास बैंक NABARD की ओर से किसानों को समृद्ध बनाने की दिशा में निरंतर प्रयास जारी हैं। इसी के तहत कृषि विविधीकरण में भी नाबार्ड ने संयुक्त देयता समूह के माध्यम से किसानों की किस्मत को बदलने की योजना बनाई है। इस योजना से बटाई पर खेती करने वाले भूमिहीन किसानों एवं कृषि मजदूरों की स्थिति में व्यापक बदलाव देखने को मिल सकता है। नाबार्ड द्वारा इस कार्य में स्वयंसेवी संस्थाओं का सहयोग लिया जा रहा है।

कृषि विविधीकरण के तहत 'मिट्टी जाँचों और खाद डालो' अभियान भी चलाया जा रहा है। यानि मिट्टी में जितनी खाद की जरूरत है, उतनी ही पड़नी चाहिए। इसके लिए भारत सरकार की ओर से इन दिनों मिट्टी की जाँच पर विशेष जोर दिया जा रहा है। बदलते वक्त के साथ कृषि के स्वरूप में भी परिवर्तन आज दुनिया भर के किसानों के लिए एक बड़ी चुनौती बना हुआ है। ऐसे में जरूरी है कि किसान बदलते वक्त के मुताबिक खुद को ढाल लें और उसी के अनुरूप खेती करें। बेहतर मुनाफे के लिए कृषि उत्पादन से लेकर हार्वेस्टिंग, पैकेजिंग, एग्रो प्रोडक्ट्स की प्रोसेसिंग और मार्केटिंग के गुर सीखना आज किसानों की जरूरत बन चुका है।

आज किसान को मुख्य रूप से पूंजी और तकनीक समेत दो चीजों की जरूरत है। इस नुस्खे को जिन लोगों ने समय रहते समझ लिया वो नई तकनीक और तौर–तरीके अपनाकर मुनाफा कमा रहा है। और अब खेती उनके लिए व्यवसाय बन चुकी है। ऐसी उद्यमी किसानों की एक लम्बी सूची है जो दूसरे लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत बन सकते हैं। पुणे के अबरोल ने एग्रो टूरिज्म का एक अनूठा केन्द्र स्थापित किया है जहाँ देश–विदेश के लोग खेतीबाड़ी की प्रक्रिया को करीब से देखने के लिए आते हैं। उन्होंने पुणे के आस–पास के इलाकों में दर्जनों किसानों का एक नेटवर्क तैयार किया है जो उनकी देख–रेख में गुणवत्तायुक्त फल एवं सब्जियों का उत्पादन करके शहर में मॉल्स में सप्लाई करते हैं। यह सामूहिक मार्केटिंग का एक उत्कृष्ट नमूना कहा जा सकता है जो देश के अन्य हिस्से के किसानों के लिए भी प्रेरणादायी हो सकता है।

देश में खेती की नई तकनीक एवं नवाचारों को ईजाद करने वाले लघु सीमांत किसानों की भी अच्छी–खासी संख्या है जिनके अनुभवों से दूसरे लोगों को जरूर सबक लेना चाहिए। महाराष्ट्र के वयोवृद्ध किसान दादाजी खोबरागडे ने अपनी सूझ–बूझ से चावल की दर्जनों किस्में विकसित की है। तो गोरखपुर की रामरती देवी को उनके मिश्रित खेती के हुनर के लिए जाना जाता है। सालभर में वो अपने एक एकड़ के रकबे में 32 फसलें लेती हैं जो कि एक मिसाल है। बदलते परिवेश में कृषि के विविधीकरण का फंडा अपनाकर मनचाहा मुनाफा कमाया जा सकता है। तमाम किसान खेती को घाटे का सौदा बताते हैं, लेकिन यह सच नहीं है। खेती के साथ पशुपालन, बागवानी, मत्स्यपालन, मिश्रित खेती करके मनचाहा मुनाफा कमाया जा सकता है। जो किसान आज इस तरीके से खेतीबाड़ी कर रहे हैं वे अपने इलाके में प्रगतिशील किसान के रूप में जाने–पहचाने जा रहे हैं। उन्हें न केवल समाज में सम्मान से देखा जाता है बल्कि सरकार की ओर से भी भरपूर मदद की जाती है।

भारत में खाद्यान उत्पादन तेजी से बढ़ रहा है। इसके बाद भी अभी चुनौतियाँ खत्म नहीं हुई है। ऐसे में कृषि विविधीकरण की नीति अपनाकर इन समस्याओं को खत्म किया जा सकता है। केन्द्र सरकार की ओर से भी कृषि से जुड़े युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। तमाम किसान जहाँ कांट्रेक्ट फार्मिंग से जुड़ रहे हैं वहीं अब ई–खेती का भी चलन बढ़ा है। इसके साथ ही फूलों की खेती, ड्रिप सिंचाई प्रणाली और बहुखेती के जरिए तमाम किसान जहाँ स्वावलंबी बन रहे हैं वहीं कृषि उत्पादकता के क्षेत्र में देश को मजबूत बना रहे हैं।

भारत में खाद्यान्न उत्पादन की दिशा में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नेतृत्व में हरित–क्रांति की शुरुआत हुई। हरित–क्रांति प्रारम्भ करने का श्रेय नोबेल पुरस्कार विजेता प्रोफेसर नारमन बोरलग को जाता है। इसके जरिए देश के सिंचित एवं असिंचित कृषि क्षेत्रों में अधिक उपज देने वाले संकर तथा बौने बीजों के उपयोग से फसल उत्पादन में वृद्धि करना है। इस क्रांति का संदेश गाँव–गाँव तक पहुंचा और जिस मकसद से इस क्रांति की शुरूआत हुई उसमें सफलता भी मिली। इस पहले से कहीं ज्यादा गतिशील बनाए जाने की जरूरत है। इसी तरह गोदामों में अनाज को सड़ने से बचाने की चुनौती भी स्वीकार करनी होगी। भारत में पंजाब और हरियाणा के भंडारगृहों में दो साल से भी अधिक समय से गेहूं रखे रहने से उसके सड़ने की घटना उजागर हुई थी, तो कोलकाता के एयरपोर्ट पर भी हजारों क्विंटल अनाज के खराब होने की बात सामने आई थी। ऐसे में सबसे ज्यादा जरूरी है कि हमारे पास भंडारण की मुक्कमल व्यवस्था हो, जिससे अनाज को पुख्ता रखा जा सके।

बिहार भारत का एक कृषि प्रधान राज्य है, यहाँ कि लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या कृषि व्यवसाय में लगी हुई है। बिहार की आजीविका का मुख्य साधन कृषि ही है लेकिन बदलते हुए परिवेश में कृषि समस्या बढ़ती जा रही है और कृषक पलायन को मजबूर हो रहे है। ऐसे में कृषि विविधीकरण आज बदलते हुए परिवेश में किसानो के लिए सफलता की कुंजी है। आज किसानों के परिवारों में सदस्यों की संख्या बढ़ रही है और कृषि भूमि संकुचित हो रही है। कृषि क्षेत्रफल की कमी से निपटने एवं किसानों को अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए कम क्षेत्रफल में अधिक नगदी फसलों का उत्पादन एवं विपणन करना होगा जिससे ग्रामीण विकास में ग्रणात्मक सुधार हो सके। किसान कम क्षेत्रफल में नवीन कृषि तकनीक का प्रयोग करके अधिकतम खाद्यान्न उत्पादन कर ग्रामीण विकास में अपना योगदान दे सके। कृषि विविधीकरण के अंतर्गत किसान अपने खेती में खाद्य संस्करण, फलों, सब्जियों, मसालों, फूलों, एवं औषधीय खेती को शामिल कर सकते है साथ ही सहायक कृषि पशुपालन, पोल्ट्री उद्योग, मछलीपालन, मधुमक्खी पालन आदि को अपना कर एक साथ कई फसलों का लाभ ले सकते है।

वर्तमान वैश्वीकरण के युग में कृषि का विविधीकरण एक अनिवार्य वास्तविकता है। प्रतियोगिता में बने रहने हेतु यह आवश्यक है कि कृषि वस्तुओं में गुणवत्ता हो और यह तभी संभव है जब कृषि क्षेत्र को एक उद्योग के रूप में विकसित कर लाभ का धंधा बनाया जाए। कृषि के विविधीकरण से एक तरफ किसानों के कृषि उत्पादन में वृद्धि होती है। साथ ही, कृषि सहायक उद्यमों का भी विकास होता है।

बदलते परिवेश में खेती की लागत बढ़ी है। ऐसी स्थिति में किसानों की समृद्धि के लिए कृषि का विविधीकरण बेहद जरूरी है। तेज औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के कारण कृषि क्षेत्र का बड़ा हिस्सा विलुप्त हो रहा है। इस लिहाज से भी कृषि का विविधीकरण का महत्व बढ़ जाता है। पिछले लगभग बीस वर्षों में खाद, कीटनाशकों, सिंचाई, अनुसंधान, प्रसार आदि पर बहुत खर्चा करने के बावजूद उत्पादकता वृद्धि दर में वांछित तेजी नहीं लाई जा सकी है। यह किसानों के लिए एक बड़ा संकट है। इस संकट से निपटने के लिए ही केन्द्र सरकार की ओर से भी कृषि के व्यवसायीकरण पर जो दिया जा रहा है। कृषि विविधीकरण को बढ़ावा देने के लिए इन दिनों मिश्रित खेती का चलन बढ़ा है। कृषि विभाग की ओर से भी इस खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। छोटी जोत के किसानों के लिए यह सबसे फायदेमंद मॉडल के रूप में सामने आया है।

बिहार में कुल 38 जिला है जो प्रतिवर्ष बाढ़ एवं सुखाड़ की समस्या से ग्रस्त रहते है। यहाँ कि जमीनी सिंचाई को देखते हुए कृषि विविधीकरण अपनाया जा सकता है जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार के साथ–साथ ग्रामीण विकास में भी वृद्धि होगी। इन जिलों में विविधीकरण के माध्यम से नगदी फसलों की खेती को बढ़ावा देने एवं बदलाव की जरूरत है। कृषि विविधीकरण से जीविकोपार्जन बढ़ेगा, अजान के उत्पादन के साथ ही फलो सब्जीयों, मशालों एवं फूलों की उत्पादकता भी बढ़ेगी एवं सहायक कृषि जैसे मछली, दूध, शहद जैसे खाद्य पदार्थों का भी उत्पादन अपनी खेतों में शुरू कर देंगे जिससे गाँवों में ही रोजगार की संभावनाएँ बढ़ेगी और कृषि से अधिक से अधिक लोगों का रोजगार मिल सकेगा। कृषि विविधीकरण क्रांतिकारी अभियान है जिसे अपनाकर कम समय में अधिक से अधिक उत्पादन कर लाभ कमा सकते है।

निष्कर्षः

नष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने के लिए कृषि का विविधीकरण बेहद महत्वपूर्ण साबित हो रहा है। मुहिम को आगे बढ़ाने के लिए यह महती आवश्यक है कि कृषि को एक व्यावसायिक मॉडल की तरह सरकारी तौर पर पेश किया जाए। किसानों को इस बारे में आश्वस्त करने की जरूरत है कि कृषि भी एक व्यवसाय है और इसमें आर्थिक लाभ की असीम संभावनाएँ हैं। इसके लिए जहाँ निचले स्तर पर किसानों को व्यावसायिक खेती हेतु सुविधाएँ उपलब्ध कराने एवं प्रोत्साहित करने की जरूरत है वहीं सरकार द्वारा सिंचाई, प्रशिक्षण, संसाधन उपलब्धता, शोध अनुसंधान में मदद से ही खेती को फायदे का सौदा बनाया जा सकता है।

संदर्भ स्रोतः

1ण वी.के. गोस्वामी (2016), आधुनिक कृषि का सिद्धांत, डिसकवरी पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ0 56
2ण के. जोशी (2016), कृषि अर्थशास्त्र के सिद्धान्त एवं भारत में कृषि विकास, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, 2017, पृ.134
3ण ए. देसाई (2016), कृषि विविधिकरण एवं उत्पादकता, राज प्रकाशन, मेरठ, पृ.– 166
4ण जी. यादव (2016), कृषि प्रबंधन एवं कृषि बाजारीकरण, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, पृ0 15.
5 एस. सिंह (2015), 'कृषि हेतु देशी तकनीकें', शोध–पत्र स्मारिका, बारहवीं राष्ट्रीय कृषि विज्ञान संगोष्ठी, (2015), भारतीय अनुसंधान समीति एवं केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल, पृ–46.